भाषोत्पत्ति विषयक विभिन्न सिद्धान्तक समीक्षा करू

जाहि ध्वनि चिह्नद्वारा मानव परस्पर विचारविनिमय करैत अछि ओकरा भाषा कहल जाइत अछि। भाषा मानवक अमूल्य निधि अछि। ई ज्ञानक सर्वोत्कृष्ट साधन अछि अतएव भाषा सामाजिक जीवनक लेल अत्यावश्यक आ अत्यन्त उपयोगी तत्व अछि।

भाषाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे भाषा वैज्ञानिक लोकनि अनेक परिकल्पना करलनि, मुदा कोनो निश्चित निष्कर्ष पर नहि पहुँच सकलाह। एहि हेतु मोरियो पाईक कथन छनि जे "If there is one thing on which all linguists are fully agreed, it is that the problem of the origin of human speech is still unsolved."

एहन स्थितिमे कखनहु-कखनहु भाषाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे विचार करबापर भाषा वैज्ञानिक लोकनि रोक सेहो लगाय देलनि अछि। हिनक लोकनि कहब छनि जे ई वैज्ञानिक प्रक्रियाक अनुकूल नहि अछि। तथापि भाषाक उत्पत्ति पर विचार होइत रहल अछि। वैज्ञानिक प्रक्रियाकेँ अपनाय भाषाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे विद्वान लोकनि अनेक सिद्धान्तक प्रतिपादन करलनि। विद्वान लोकनि भाषाक उत्पत्तिक उद्गम स्थल धरि पहुँचबाक हेतु दू मार्गक खोज करलनि —— (i) प्रत्यक्ष मार्ग - (ii) परोक्ष मार्ग

(i) प्रत्यक्ष मार्ग —: प्रत्यक्ष मार्गमे सामान्य सिद्धांत समक निर्धारण करैत प्राचीनताक आधार पर अर्वाचीनताक जानकारी देल जाइत अछि। एकर अन्तर्गत भाषाक उत्पत्ति तथा विकाससँ सम्बन्धित निम्नलिखित सिद्धान्त अछि —:

(क) दैवी सिद्धांत —: ई मत प्राचीनतम मत अछि। एहि मतकेँ माननिहार भाषाकेँ दैवी उत्पत्ति मानैत छथि। हिनक समक कथन छनि जे जाहि प्रकारे मानवक श्वास-प्रश्वास क्रिया जन्महिसँ सहजात अछि

आदि प्रकारे बिना कोनो चेष्टाकेँ ओ एहि सम्पन्न दैवी वाकक प्रयोग सेहो करय लागल अछि। ईश्वरीय शक्तिक अभिव्यक्तक लेल मानव मे एहि दिव्य वाकके प्रस्फुटित कएल्नि। एहि मतक प्रवर्तकक कथन छलि जे भाषा मानवके ईश्वर प्रदत्त वस्तु थिक। अतएव एहि मतक समर्थक धार्मिक भावनाके लक्ष्के चलैत छथि। एहि कारण स प्रत्येक धर्मावलम्बी अपन आदि ग्रन्थके ईश्वरक कृति आ ओकर भाषाकेँ आदि भाषा मानैत छथि। ऋग्वेद मे स्पष्ट कहल गेल अछि जे देवता वाग्देवीके उत्पन्न कएलन्हि आ ओकरा सभ प्राणी बजैत अछि। अतएव हिन्दू संस्कृत भाषाके आदि भाषा मानैत आ छथि। एहि रूपेँ अन्य धर्म सभ सेहो अपन धर्मके भाषाक उत्पत्तिक आदि ग्रन्थ मानैत छथि।

किन्तु, भाषाक उत्पत्तिक दैवी सिद्धान्त सर्वमान्य नहि अछि। ई सिद्धान्त मात्र श्रद्धा पर आधारित अछि मुदा विज्ञान एवं तर्कस संगत नहि होएबाक कारणे ई मत अमान्य भऽ गेल अछि। एहि मतक विपक्ष मे निम्नलिखित तर्क देल गेल अछि —

(i) प्रसिद्ध जर्मन विद्वान 'हर्डर'क अनुसार जँ भाषाक उत्पत्ति ईश्वर द्वारा होइतय तँ ओहिमे बेशी पूर्णता, व्यवस्था एवं बुद्धिसंगतता आदि होइतए।

(ii) संसारमे पशु-पक्षी सभक भाषा सर्वत्र एके सदृश अछि। मुदा मानवक बोली मे ई एकरूपता नहि भेटैत अछि।

(iii) जेँ भाषाके ईश्वर उत्पन्न कएलनि अछि तँ भाषाके आदि रूपमे शाश्वत रहबाक चाही। एकर विपरीत भाषा मे सदैव परिवर्तन होइत रहैत अछि।

(iv) अनिश्वरवादी आ नास्तिक लोक सभ भाषाक उत्पत्तिक दैवी सिद्धान्त पर कखनहु आस्था नहि व्यक्त कए सकैत छथि।

एहि रूप सँ स्पष्ट भए गेल अछि जे वैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ भाषाक उत्पत्तिक दैवी सिद्धान्तके स्वीकार नहि कएल जा सकैत अछि।

(ख) ~~संकेत~~ संकेत सिद्धांत —:

एकरा निर्णय सिद्धांत सेहो कहल जाइछ। एकर सर्वप्रथम प्रतिपादक फ्रांसीसी विचारक रूसो छथि। एहि सिद्धान्तक अनुसार आदिम मानव अपन मनोभाव सभकेँ आंगिक संकेत सभक करैत छल ~~मुदा~~ मुदा बादमे कठिनता भेला उत्तर सामाजिक समझौताक आधार पर ओ सभ विभिन्न भाव, विचार आ पदार्थ सभक लेल विभिन्न ध्वन्यात्मक संकेत निश्चित कएलनि। एकरा स्वीकारवादक सिद्धान्त सेहो कहल जाइत अछि। आचार्य भामह सेहो ~~कहल जाइत अछि~~ अपन काव्यालंकार ग्रन्थमे कहने छथि —:

इयन्त ईदृशा वर्णा ईदृगर्थाभिधायिनः।
व्यवहाराय लोकस्य प्रागित्थं समयः कृतः॥

एहि संकेत सिद्धान्तक आधार पर रिचर्ड, शॉब तथा जोइन्स आदि विद्वान लोकनि इंगित सिद्धान्तक प्रतिपादन कएलनि।

परीक्षण कएला पर ज्ञात भेल जे एहो सिद्धान्त उचित प्रतीत नहि होइत अछि। किएक तँ जँ मानवक मध्य कोनो भाषा छल तँ नवभाषाक निर्माणक कोन आवश्यकता छल।

(ग) धातु सिद्धान्त —:

एहि सिद्धान्तक प्रतिपादक मैक्समूलर छथि। ओना एहि सिद्धान्तक उद्भावना प्रोफेसर हेस कएने छलाह। मैक्समूलरक कहब छनि जे सृष्टिक आदिमे मानवमे एक एहन स्वाभाविक निर्माणिका शक्ति छल जे चारि सौ वा पाँच सौ धातु सभकेँ जन्म दए नष्ट भए गेल अछि। तत्पश्चात ओहि मूल धातु सभसँ नव-नव शब्द बनायबकेँ काज चलाबए लागल।

एहि सिद्धान्तकेँ डिंगडांग सिद्धान्त अथवा रणन सिद्धान्त सेहो कहल जाइत अछि। एहि सिद्धान्तक समर्थक प्लेटोनिक मत छनि जे संसारमे प्रत्येक वस्तुक अपन विशिष्ट ध्वनि होइत छैक, ओकरा पर चोट पड़लापर मुखरित भए जाइत अछि। ~~अंग्रेजी~~ घंटा पर आघात कएला पर जे ध्वनि होइत अछि ओकरा रणन कहैत छैक। अं: एहि सिद्धान्तकेँ रणन सिद्धान्त सेहो कहल जाइत अछि।

(५)

एहि सिद्धान्तकें समीक्षा करबापर सिद्ध होइत अछि जे इहो अवैज्ञानिक सिद्धान्त अछि। एकर अनेक कारण अछि, यथा— (क) डॉ० भोलानाथ तिवारीक मतसँ हम पूर्ण सहमत छी जे एहि प्रकारक मानबाक कल्पनाक करब निराधार अछि। (ख) एहि सिद्धान्तक आधारपर विश्वक सभ भाषा परिवारक धातु समक पता नहि चलैत अछि। (ग) भाषा धातुक अतिरिक्त प्रत्यय आ उपसर्गसँ सेहो बनैत अछि। (घ) ई सिद्धान्त भाषाकें पूर्ण मानैत अछि। (ङ) ई सिद्धान्त भाषाकें पूर्ण मानैत अछि, जखन कि भाषा वस्तुतः अपूर्ण अछि।

एहि सिद्धान्तक आधार पर ई सिद्धान्त महत्वहीन सिद्ध भए गेल अछि।

(घ) अनुकरण सिद्धान्त → एहि सिद्धान्तक अनुसार भाषाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे ई कल्पना कएल जाइत अछि, जे मानव, पशु-पक्षी एवं प्राकृतिक अन्यान्य ध्वनि समक अनुकरणपर भाषाक निर्माण कएलक अछि। मानव चेतन-अचेतन सभ पदार्थक ध्वनि समक अनुकरण करैत पहिने किछु-किछु शब्द बनाय लेलक आ फेर ओहि शब्द समसँ अन्य शब्द बनबैत भाषाक विकास कए लेलक। मानव जाहि पदार्थ अथवा प्राणीक जेहन ध्वनि सुनलक ओकरे अनुकरण करैत ओहि ध्वनि समक आधार पर ओहि वस्तु वा प्राणी समक नामकरण कए देलक। ह्विटनी, पाल, हर्डर आदि विद्वान एहि सिद्धान्तक मानिनिहार छथि।

मैक्समूलर एहि सिद्धान्तक उपहास करैत छथि। एहि सिद्धान्तक खण्डन-मण्डन करैत कहल जा सकैत अछि जे भाषामे अनुकरणात्मक शब्द समकें देखिकें हम कहि सकैत छी जे ई मत आंशिक रूपसँ सत्य अछि। मुदा मानव संसारमे सर्वाधिक मननशील अछि, तखन ओ पशु-पक्षी आदिक अनुकरण करलक, स्वयं भाषाक निर्माण किएक नहि कयलक। किएक तँ अनुकरणात्मक शब्द कोनो भाषाक अलंकार बनि सकैत अछि, आधार नहि।

IInd

(5.) आवेग सिद्धान्त —:

एहि सिद्धान्तक (विकासे) अनुसार मानव विभिन्न अवसर पर अपन - सुख - दुःख, घृणा - क्रोध आदिक भावके व्यक्त करैत अछि। ओहि कालमे हस्त-संकेत आ चेष्टा सभक स्थानपर मानवक मुँहसँ किछु ध्वनि सभक उत्पत्ति होइत अछि यथा - ओह, आह, हाय, ओह, धिक, छि: पूह आदि। एहि प्रकारे मानवक मुँहसँ निःसृत मनोभावाभिव्यंजक शब्द सभसँ भाषाक उत्पत्ति एवं विकास भेल अछि।

एहि सिद्धान्त समीक्षा कयला उत्तर अनेक त्रुटि देखल जाइत अछि ; यथा —:

(क) भिन्न-भिन्न भाषामे एक गोट भावके व्यक्त करबाक हेतु एक सदृश शब्द नहि भेटैत अछि, जेना पीड़ाकेँ व्यक्त करबाक हेतु अंग्रेजी ओह (Oh) जर्मन आउ (AU), फ्रांसीसी आहि (Ahi) मैथिल 'ओह' आदिक व्यवहार करैत अछि।

(ख) एहन शब्दक संख्या कोनो भाषा मे अति अछि

(ग) एहन शब्द भाषाक प्रधान अंग नहि अछि। मुदा एहि सिद्धान्तक द्वारा उत्पन्न भेल शब्द सभक प्रयोग भाषामे होइत अछि। अतएव भाषाक उत्पत्ति एवं विकासमे एहि सिद्धान्तक किछु योगदान अवश्य प्रतीत होइत अछि।

(च) श्रमपरिहरणमूलकतावाद —:

एकरा 'यो-हे-हो' सिद्धान्त सेहो कहल जाइत अछि। एहि सिद्धान्तक प्रतिपादक न्वायर कें छथि। एहि सिद्धान्तक अनुसार मानव जखन श्रम करैत अछि तखन ओकर श्वासक गति तीव्र भए जाइत छैक आ अधिक तीव्रताक कारण स्वतन्त्री सभमे कम्पन्न उत्पन्न भए जाइत अछि। एहन शब्दमे ई कहल जा सकैत अछि जे श्रम करबाक काल श्रम परिहार करबाक हेतु किछु शब्द उच्चरित स्वाभाविक रूपसँ होइत रहैत अछि। यथा - धोबीक मुँहसँ 'छियो-छियो', वजनदार शब्दकेँ उठबिनिहारक मुँहसँ 'हइया' मल्लाहक मुँहसँ नाव खेबाक काल 'हैया-हैया' आदि शब्द निकलैत अछि।

एहि सिद्धान्तक आधार पर ई निश्चित करल गेल जे आदिम मानव सामूहिक श्रम करबाक कारण एहि प्रकारक ध्वनि उत्पन्न करैत छलाह जे आदि कार्यक द्योतक भऽ गेल।

एहि सिद्धान्तमे सेहो निम्नलिखित दोष अछि :

(क) आवेग सिद्धान्तक सदृशे एहि सिद्धान्त द्वारा उत्पन्न ध्वनि सभ निरर्थक अछि।

(ख) श्रम-परिहार सूचक ध्वनिमे संसारक विभिन्न भाषाक एकरूपता नहि अछि। एहि क्रममे देखल गेल अछि जे भारतक मजदूर जातिक ध्वनिक उच्चारण श्रम-परिहारक रूपमे करैत अछि।

(ग) संसारक कतेको भाषामे श्रम-परिहार सूचक ध्वनिक सत्ता पर्यन्त नहि अछि।

(घ) एकर संख्या अत्यल्प अछि।

(छ) इंगित सिद्धान्त :

इंगित सिद्धान्तकेँ प्रतिपादन करयबलामे डॉ॰ राय, रिचर्ड, जोहान्स आदि छथि। एहि सिद्धान्तक अनुसार आदिम मानव स्वयं अपन अंग समक्ष होमयबला चेष्टा वा ध्वनिक वाणी द्वारा अनुकरण कए जे ध्वनि प्रस्तुत करलक ओकरे आधार पर भाषाक उत्पत्ति भेल। यथा – पानि पीबाक क्रियाक संग ठोरकेँ हिलयबासँ हिन्दीमे पीना, पिपासा, मैथिलीमे पियब, पियास, अँग्रेजीमे Sip वा Suck बनल अछि।

मुदा जखन आदिकालमे कोनो भाषा नहि छल तखन ई प्रतीक निर्धारण कोना भेल होएत? एकर अतिरिक्त एखन शब्द संख्या बहुत कम अछि तखन एहि आधार सम्पूर्ण भाषाक उत्पत्ति असम्भव अछि। एहि कारण इहो सिद्धान्त अनुमाने पर आधारित अछि।

(ज) सम्पर्क सिद्धान्त →

एहि सिद्धान्तक प्रवर्तक मनोवै-

Scanned with CamScanner

त्रानिक जी० रैवेज ~~अछि~~ छथि। एहि सिद्धान्तक अनुसारें आदि मानव जखन अपन अपन दोसर संगीक संग अपन दोसर संगीक सँ चारू दिशक विस्तृत वातावरणक सम्पर्कमे आएल तखन एहि सम्पर्कक फलस्वरूप भाषा उत्पन्न भेल होयत। सम्पर्कक कारण मानव सक्रिय भेल होएत आ सक्रियताक कारण ध्वनि सभ उत्पन्न भेल होएत। एहि ढंग जी० रैवेजक कथन छनि जे भाषामे पहिने क्रिया बनल होएत आ बादमे शब्द।

उपर्युक्त विवेचन सँ ई सिद्ध होइत अछि जे भाषाक उत्पत्ति आ विकासमे मनोविज्ञानक योगदान अवश्य अछि। मुदा ई भाषोत्पत्तिक समग्र सिद्धान्त नहि अछि। भाषोत्पत्तिक सभ समस्याक समाधान एहि सिद्धान्त सँ नहि भए सकैत छैक।

(झ) संगीत सिद्धांत —

मानवक प्रकृति सहज संगीत सुलभ होइत अछि। आदिम मानव भावुक रहल होएत, एहि हेतु प्रेम एवं सुख-दुःख अवसर पर ओ गुनगुनाएल होएत एवं ओकर गुनगुनएलासँ शब्द बनल होएत आ ओहिसँ भाषाक विकास भेल होएत। एहि सिद्धान्तकेँ प्रेम सिद्धान्त सेहो कहल जाइत अछि।

ईहो सिद्धान्त अनुमान पर आधारित अछि।

(ञ) समन्वित सिद्धान्त —

~~सभ सिद्धान्तक ए~~ किछु भाषा वैज्ञानिक उपर्युक्त सभ सिद्धान्तक समन्वयसँ तँ किछु भाषा वैज्ञानिक तीन-चारि सिद्धान्तक सम्बन्धसँ भाषाक उत्पत्ति मानल गेल अछि। मुदा, वास्तविकमे देखल जाय तँ सभ सिद्धान्तक समन्वित रूपसँ भाषाक उत्पत्ति भेल।

भाषोत्पत्ति विषयक परोक्ष ~~अ प्रत्यक्ष~~ अध्ययन कएलाक ज्ञात होइत अछि जे भाषोत्पत्ति विषयक एको गोट पद्धति पूर्ण नहि अछि। भाषोत्पत्ति विषयक समस्या जटिल अछि। एखनहुँ धरि अनुसन्धान जारी अछि। हम आशा करैत छी जे अनुसन्धान प्रक्रियामे सुन्दर परिणाम भेटि जाएत।

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक